**HISTORY**

**B.A.PART-II (Subs)**

**Paper-II (Mediaeval Indian History)**

**Unit-I, (Life and Achievement of Babar)**

**Dr. GUDDY KUMARI**

**(Guest Lecturer), History Deptt.**

**A.N.D. College, Samastipur**

**Lecture Series - 32**

# "बाबर की जीवनी तथा उपलब्धियां"

# (Life and Achievement of Babar)

## # बाबर का प्रारंभिक जीवन...

मुगल साम्राज्य के संस्थापक जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 ई को मध्य एशिया के छोटे से प्रदेश फरगना में हुआ था। उसके पिता का नाम उमर शेख मिर्जा एवं माता का नाम कुतुलुग निगार खानम था। बाबर पिता की ओर से तैमूर लंग वंश के पांचवी पीढ़ी में एवं माता की ओर से चंगेज खां के 14 वीं पीढी में से था। इस प्रकार बाबर के धमनियों में दो महान विजेता का रक्त दौड़ रहा था। बाबर के चरित्र में मंगोलो की क्रूरता एवं तुर्कों की योग्यता एवं साहस का अद्वितीय समन्वय था।

12 वर्ष की उम्र में ही बाबर के सर से पिता का शीतल छाया हट गया। पिता के मृत्यु के बाद बाल्यकाल में ही बाबर 8 जून 1494 को फरगना का उत्तराधिकारी घोषित हुआ। बाबर के लिए फरगना का राज्य फूलों के सेज के बदले कांटों का ताज साबित हुआ। पिता के असामयिक मृत्यु के बाद सगे संबंधियों की गिद्ध नजर फरगना पर लगी थी। बाबर के विद्रोहियों ने फरगना पर आक्रमण कर दिया। बाबर ने इस आक्रमण को साहस एवं धैर्य के साथ विफल कर दिया एवं फरगना का प्रबंध व्यवस्था संभाल कर प्रजा के बीच लोकप्रिय हो गया।

बाबर एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। फरगना की छोटी सी रियासत पाकर संतुष्ट नहीं था। बाबर ने 1496 ई में तैमूर की राजधानी समरकंद पर आक्रमण किया परंतु असफल रहा। 1497 ई में समरकंद पर पुनः उसका अधिकार हो गया। मात्र 100 दिन के बाद ही समरकंद छोड़कर वह फरगना विद्रोह शांत करने के लिए आया। किंतु उसके आने के पहले शैबानी खा ने फरगना पर अधिकार कर लिया, इस प्रकार बाबरनामा में उसने स्वयं लिखा है "फरगना के लिए मैंने समरकंद को खोया और एक को पाए बिना दूसरे को खो दिया" फरगना एवं समरकंद खोने के बाद बाबर स्वयं खानाबदोश हो गया, लेकिन शीघ्र ही बाबर के भाग्य ने साथ दिया और 1499 ई में उसने पुनः फरगना पर अधिकार कर लिया। बाबर के साथ भाग्य आंख

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

मिचौली कर रहा था। 1500 में फरगना बाबर के हाथ से निकल गई, 1501 ई में समरकंद पर बाबर का अधिकार हो गया, लेकिन पुन: 1502 ईस्वी में समरकंद बाबर के हाथ से निकल गया। 1502 से 1504 तक बाबर फिर खानाबदोश हो गया। लेकिन महत्वाकांक्षी बाबर निरंतर संघर्ष करने के दृढ़ संकल्प से बाज नहीं आया।

## ✓काबुल विजय....

बाबर ने 1504 ई में काबुल एवं गजनी के राजनीतिक उपद्रव से लाभ उठाकर उस पर अधिकार कर लिया। काबुल विजय के बाद बाबर के भाग्य ही बदल गए। 1506 ईस्वी में बाबर के जेष्ठ पुत्र हुमायूं का जन्म काबुल में ही हुआ। 1507 ई में बाबर ने बादशाह की उपाधि धारण की। अतः 1511 इसवी में बाबर ने ईरान के शासक इस्माइल की सहायता से समरकंद बुखारा एवं खुरासान पर विजय प्राप्त कर लिया। पुनः 1520 ईस्वी में समरकंद उसके हाथों से निकल गया। इस प्रकार उत्तर–पश्चिम में साम्राज्य विस्तार की लालसा पूरी नहीं हो सकी तो बाबर ने दक्षिण पूर्व की ओर अपना ध्यान केंद्रित कर लिया।

## ✓भारत पर बाबर का आक्रमण...

बाबर भारत की अपार संपत्ति पर लालचाई आंखों से देख रहा था। भारत विजय के लिए बाबर के सामने अनेक कठिनाइयां थी। उसने जब इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लिया तो भारतीय सीमा में प्रवेश पाने की तैयारी करने लगा। भारत प्रवेश के पहले बाबर ने ईरानीयों की सहायता से तोपखानों का निर्माण किया जो भारत विजय में काफी कारगर साबित हुआ।

## ✓भारत पर बाबर का पहला आक्रमण...

1519 ई में बाबर ने भारत पर पहला आक्रमण कर बाजौर एवं भीरा पर विजय प्राप्त कर लिया। उसके बाद बाबर ने तुर्कों के अधिकार क्षेत्र वाले प्रदेश को लौटाने के उद्देश्य से इब्राहिम लोदी एवं पंजाब के गवर्नर दौलत खां लोदी के पास अपना राजदूत भेजा लेकिन राजदूत को लाहौर में ही रोक लिया गया। बाबर को राजदूत का कोई सूचना ना मिले कारण वह कबुल लौट गया।

## ✓भारत पर बाबर का दूसरा आक्रमण...

सितंबर 1519 ई में दूसरी बार भारत पर बाबर के आक्रमण का उद्देश्य युसूफजाइयों का दमन कर पेशावर के किले में रसद एकत्र करना था किंतु ऐसे मौके पर बदख्शा में विद्रोह की सूचना पाकर बाबर भारत विजय का सपना त्याग कर काबुल लौट गया।

## ✓भारत पर बाबर का तीसरा आक्रमण..

भारत पर बाबर का तीसरा आक्रमण 1520 ई में हुआ। उसने बाजौर, भीरा एवं सियालकोट के साथ–साथ सैयदपुर पर भी अधिकार कर लिया। इस बीच बाबर को सूचना मिली कि कंधार में अशांति फैल गई है। अतः उसने शाहबेग और अर्गुण को सबक सिखाने के उद्देश्य से तीसरी बार कबुल लौट गया। उसने कंदहार पर विजय पाकर उसे अपने पुत्र कामरान को सौंप दिया।

## ✓भारत पर बाबर का चौथा आक्रमण...

Dr Guddu Kumari (A.N.D College)

बाबर ने अफगानिस्तान पर अधिकार कर 1524 ईस्वी में भारत पर चौथा आक्रमण करने का प्रयास किया। इस बार आक्रमण करने का निमंत्रण भारत के ही कुछ असंतुष्ट सम्राटओ द्वारा मिला था। लेकिन सुल्तान इब्राहिम लोदी ने उनके आशा पर पानी फेर दिया।

## ✓भारत पर बाबर का पांचवा आक्रमण...

बाबर पांचवीं बार पूरी तैयारी के साथ नवंबर 1525 ईस्वी में भारत पर आक्रमण किया। उसके साथ हुमायूं एवं झेलम नदी पार करने के बाद लाहौर की सेना भी साथ हो गई। सबसे पहले बाबर का सामना दौलत खा के साथ हुआ। लेकिन दौलत खां को परास्त कर बाबर दिल्ली की ओर बढ़ा। बाबर की विजय की सूचना पाकर इब्राहिम लोदी विशाल सेना के साथ प्रस्थान किया। जो बाबर के मार्ग में एकमात्र रोड़ा था। बाबर यमुना नदी को पार कर 12 अप्रैल 1526 ई को ही पानीपत के मैदान में पहुंच गया था। लेकिन 12 अप्रैल से 19 अप्रैल तक कोई महत्वपूर्ण युद्ध नहीं हुआ।

## 1. पानीपत का प्रथम युद्ध....

21 अप्रैल 1526 ई में बाबर एवं इब्राहिम लोदी की सेनाएं पानीपत के मैदान में एक दूसरे के आमने सामने खड़ी हो गई। बाबर अपने चिर संचित अभिलाषा को पूरा करने के लिए पानीपत के मैदान में उतरा था। बाबर के साथ आधुनिक तरीकों से लैस सेनाओं का संगठन एवं तोपखाने थे। लेकिन इब्राहिम लोदी परंपरागत ढंग से ही युद्ध के मैदान में उतरा था। युद्ध प्रारंभ होने के कुछ पल में ही बाबर के कुशल तोपचियों के सामने इब्राहिम की सेना शीघ्र ही अपना संतुलन खो बैठी और परिणाम बाबर के आशा के अनुकूल हुआ। इब्राहिम लोदी युद्ध क्षेत्र में ही मारा गया। यज्ञ युद्ध आधे दिन ही चला लेकिन इसमें 40 से 50000 लोग हताश हुए बाबर के विजय के साथ ही प्रथम अफगान साम्राज्य नष्ट हो गया।

## 2. खानवा का युद्ध...

बाबर के विश्वासघात के कारण राणा संग्राम सिंह एवं बाबर के बीच खानवा के मैदान में युद्ध हुआ। बाबर ने राजपूतों के साथ हुए इस युद्ध को धर्म युद्ध या जिहाद का नाम दिया। जिसके कारण अफगान सरदारों ने डटकर उसके विरुद्ध बाबर का साथ दिया। दोनों सेनाओं के बीच शनिवार 16 मार्च 1527 ईस्वी को युद्ध हुआ। इस युद्ध में बाबर ने तुलगामा पद्धति का सहारा लिया। जिसके कारण राणा संग्राम सिंह ने पराजित होकर मैदान छोड़कर भाग गया। खानवा विजय के बाद बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की।

## 3. चंदेरी का युद्ध..

29 जनवरी 1528 ईसवी को बाबर चंदेरी के शासक मेदिनी राय को पराजित कर चंदेरी पर अधिकार कर लिया। चंदेरी का राज्य सामरिक एवं व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था।

## 4. घाघरा का युद्ध...

बाबर गंगा नदी पार कर बंगाल एवं बिहार के विरोधी अफ़गानों को दबाने के लिए आगे बढ़ा। अतः 16 मई 1529 ईसवी में घाघरा नदी के किनारे दोनों सेनाओं के बीच युद्ध हुआ। इस युद्ध में अफगान विद्रोहियों को कुचल दिया गया। घागरा विजय के बाद बाबर सारे उत्तर भारत का स्वामी बन गया।

## ✓बाबर का साम्राज्य विस्तार..

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

बाबर का साम्राज्य विस्तार की सीमा सिंध नदी से बिहार तक एवं हिमालय से लेकर चंदेरी तक फैल चुकी थी।

## ✓बाबर की मृत्यु...

घागरा विजय के बाद बाबर का स्वास्थ्य गिरने लगा। अत: 26 दिसंबर 1530 ईस्वी को 47 वर्ष की आयु में बाबर इस संसार से चल बसा। उसके मृत्यु के बारे में मशहूर किस्सा है "एक बार उसका पुत्र हुमायूं बीमार पड़ा और कहते हैं कि उसके प्रेम में बाबर खुद अपना जीवन चढ़ाने के लिए तैयार हो गया बशर्ते कि उसका पुत्र अच्छा हो जाए कहते हैं कि हुमायूं अच्छा हो गया और इस घटना के कुछ ही दिन बाद बाबर की मृत्यु हो गई"। बाबर को आगरा के आराम बाग में दफनाया गया लेकिन बाद में उसकी पत्नी के आग्रह पर काबुल के उद्यान में दफनाया गया। जिसका निर्माण बाबर ने अपने जीवन काल में किया था।

## ✓बाबर का मूल्यांकन..

बाबर एक महान चरित्र का व्यक्ति था। वह एक उच्च कोटि का साहित्यकार, कला प्रेमी और प्रकृति का पुजारी था। वह एक प्रशंसनीय घुड़सवार, सुंदर निशानेबाज, अच्छा तलवारबाज एवं एक कुशल शिकारी था। वह फारसी अरबी एवं तुर्की भाषा का अच्छा ज्ञाता था। उसने अनेक बागों जलाशयों एवं पुलों का निर्माण करवाया था। व्यक्तिगत जीवन में बाबर इस्लाम धर्म का पक्का अनुयाई था। वह सुनी धर्म को मानता था। लेकिन वह गैर मुसलमानों के प्रति सहिष्णु था।

**!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!!**

Dr.Guddy Kumari (A.N.D College)